

ज्ञान को ग्रहण करने के लिए खुला रखें दृष्टिकोण : डा. सोनल

जासं • लखनऊ : पद्मभूषण से अलंकृत शास्त्रीय नृत्यांगना डा. सोनल मानसिंह ने सोमवार को अपनी कला-साधना के अनुभव विद्यार्थियों से साझा किए। कहा, जीवन में मिलने वाला हर अवसर महत्वपूर्ण है, इसलिए उसे पूरी सजगता के साथ ग्रहण करना चाहिए। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को समझें। ज्ञान जहां से भी मिले, उसे ग्रहण करने के लिए दृष्टिकोण खुला रखें।

भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में बिरजू महाराज चेयर के अंतर्गत आयोजित विमर्श एवं नृत्य कार्यशाला में डा. सोनल ने गुरु की महिमा पर चर्चा की। कहा, गुरु केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि साधक को सही दिशा दिखाने वाला मार्गदर्शक होता है।

नाट्यशास्त्र के संदर्भ में उन्होंने कहा, कला केवल प्रदर्शन नहीं, बल्कि जीवन और समाज को समझने का माध्यम भी है। निरंतर अभ्यास, अनुशासन, साधना और संवेदनशीलता से ही प्रतिभा सार्थक होती है। दूसरे सत्र में भरतनाट्यम और कथक की प्रस्तुतियां हुईं। डा. सोनल मानसिंह ने प्रस्तुतियों का अवलोकन कर विद्यार्थियों को सुधार के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन दिया। उन्होंने अंग, दृष्टि, मन और भाव के समन्वय को भी समझाया। इससे पहले विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने डा. सोनल को अंगवस्त्र व स्मृति चिह्न भेंट कर उनका स्वागत किया। कुलसचिव अतुल कुमार ने पुष्पगुच्छ भेंट किया।

